

क्या चांद के मनोवैज्ञानिक प्रभाव होते हैं?

विश्व मोहन तिवारी

चांद बनने की दो विधियां हैं.. एक तो, ग्रह के ही गैसीय पदार्थ से और दूसरे, किसी विदेशी पर्यटक को कैदी बनाकर। हमारा चांद शायद तीसरी विधि से उत्पन्न हुआ है। कोई 4.5 अरब वर्ष पूर्व एक विशाल पिण्ड टकराया और उसने बहुत-सा लावा जैसा पदार्थ बाहर फेंका जो धीरे-धीरे ठोस हो गया और पृथ्वी की परिक्रमा करने लगा।

हमारी पृथ्वी का एक चन्द्रमा है, सुन्दर, सुशीतल, मनोहर। इसमें एक स्थान, उत्तरी ध्रुव के निकट, पियरी क्रेटर ऐसा अनोखा है कि वहां कभी सूरज नहीं डूबता। इस स्थान को नाम दिया गया है, 'शाश्वत प्रकाश की चोटी'।

चांद का रात्रि का सौन्दर्य इतना निराला है कि कवि हज़ारों वर्षों से उसके सौन्दर्य का वर्णन करते नहीं थके हैं। आज के वैज्ञानिक युग में भी न जाने कितने अंधविश्वास उससे जुड़े हुए हैं। उदाहरणार्थ, यही कि पूर्णिमा की रात्रि में अपराध, यातायात-दुर्घटनाएं, हिंसा, हत्याएं तथा आत्महत्याएं, मानसिक रोग के आक्रमण, नींद में चलना, मिर्गी आदि बढ़ जाते हैं।

तीन मनोवैज्ञानिकों, कैली, राटन तथा क्लवर, ने 1996 में ऐसे चान्द्र प्रभाव पर एक सौ से अधिक अध्ययनों की जांच पड़ताल की और उन्हें इनमें कोई भी विश्वसनीय

सम्बंध नहीं दिखा।

मज़े की बात यह है कि चान्द्र प्रभाव की वैज्ञानिकता दर्शाने के लिए वैज्ञानिक-से दिखने वाले तर्क का उपयोग किया जाता है। मनुष्य के शरीर में 80 प्रतिशत जल है, चन्द्र के प्रभाव से समुद्र में ज्वार आता है, वनस्पतियों पर असर पड़ता है अतएव मस्तिष्क पर भी प्रभाव तो पड़ेगा ही। या फिर वे पीयूष ग्रन्थि जैसे किसी वैज्ञानिक पद का उपयोग कर अपने कथन के विज्ञान सम्मत होने का भ्रम पैदा करते हैं।

यह तो ठीक है कि पूर्णिमा की चांदनी में हम कुछ अधिक रूमानी हो सकते हैं या कविता-प्रेमी हो सकते हैं, किन्तु किसी भी स्थिति में अपनी बुद्धि पर नियंत्रण नहीं खो सकते।

वैज्ञानिक समझ कहती है कि किसी भी कथन या वि वास को जांचो परखो और फिर उसे स्वीकार करो। यदि जांच पड़ताल नहीं कर सकते तब उस विषय पर प्रमाणित टिप्पणियां देखो, आधिकारिक व्यक्तियों की सम्मति देखो, अन्यथा अपना मत खुला रखो। इसी समझ से उन तीनों मनोवैज्ञानिकों ने उपरोक्त जांच पड़ताल की और विज्ञान सम्मत निष्कर्ष निकाला। (*स्रोत फीचर्स*)